International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों की सुदृढ़ीकरण और मूल्यांकन की भूमिका का अध्ययन

RASHMI
RESEARCH SCHOLAR, GLOCAL UNIVERSITY, SAHARANPUR, U.P.

DR. POONAM LATA MIDDHA
PROFESSOR, GLOCAL UNIVERSITY, SAHARANPUR, U.P.

सारांश

प्रभावी शिक्षक सीखने की प्रक्रियाओं के अपने ज्ञान का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए करते हैं कि कौन सी कक्षा में विशेष रूप से छात्रों को सफलतापूर्वक सीखने में मदद करने के लिए सबसे प्रभावी होगा। प्रभावी शिक्षक अपने छात्रों के साथ उत्पादक संबंध विकसित करते हैं, जिससे वे उन्हें जानते हैं और उनके समग्र विकास और प्रगति में विशेष रुचि लेते हैं। वे अपने छात्रों के साथ सम्मान का व्यवहार करते हैं और बदले में भी यही उम्मीद करते हैं। प्रभावी शिक्षक छात्र सीखने में लाभ के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करते हैं। प्रभावी शिक्षक मानकों को समझते हैं कि उनके छात्रों को मूल्यांकन विधियों की एक श्रृंखला को प्राप्त करने और उपयोग करने की उम्मीद है। देश की भावी उच्च श्रेणी की सोच निर्माण और उत्थान के लिए शिक्षक की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक की शिक्षा के बिना नई तकनीक संभव नहीं हो सकती। शिक्षा में गुणवत्ता विशेष रूप से शिक्षक की शिक्षा महंगी नहीं है, लेकिन इसके लिए शिक्षण–शिक्षण प्रक्रिया में कुछ प्रतिबद्धता, शिक्षण कार्य में भागीदारी, सक्षम शिक्षक और शिक्षण पर केंद्रित बच्चे की आवश्यकता है। कुशल शिक्षक छात्रों को स्वयं के साथ और दूसरों से सीखने में मदद करते हैं। वे जानते हैं कि छात्र सबसे अच्छा सीखते हैं यदि उन्हें न केवल शिक्षक से, बल्कि साथियों और स्कूल के बाहर के स्रोतों से भी सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है जो अब विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी के माध्यम से आसानी से उपलब्ध हैं। प्रभावी शिक्षक शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से एक सुरक्षित और व्यवस्थित वातावरण प्रदान

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

करते हैं, ताकि छात्र अपनी क्षमता को प्राप्त कर सकें। वे जानते हैं कि छात्र सबसे अच्छी तरह से सीखते हैं।

मुख्य शब्द शिक्षण क्षमता, शिक्षक, सीखने की रणनीति, शिक्षण कार्य में भागीदारी

प्रस्तावना

शिक्षकों और छात्र शिक्षकों के शैक्षिक अभिविन्यास की जांच करने के लिए मजबूर किया। यह शोध मजबूत राय पर आधारित है कि छात्र शिक्षकों के बीच वयस्क शिक्षार्थियों के रूप में सीखना सबसे अच्छा हासिल किया जाता है जब सीखने को प्रासंगिक बनाया जाता है, जब उनकी राय, विचार और अनुभव पर विचार किया जाता हैय और जब सीखने को उनकी शारीरिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किया जाता हैय और उन्हें सम्मान के साथ माना जाता है। वर्तमान अनुसंधान का उद्देश्य यह जांच करना है कि क्या यह आधार शिक्षा के कॉलेजों में शिक्षक की शिक्षा प्रथाओं का मार्गदर्शन करता है। अनुसंधान शिक्षा के कॉलेजों में छात्र शिक्षकों और शिक्षक शिक्षकों की शैक्षिक झुकाव का पता लगाने के लिए करना चाहता है। इसके अलावा, अध्ययन शिक्षण विधियों की पसंद पर इन झुकावों के निहितार्थों का आकलन करता है जो शिक्षक शिक्षक विभिन्न शिक्षण और सीखने की सेटिंग्स में नियुक्त करते हैं। संक्षेप में, शिक्षक की शिक्षाएक शैक्षिक कार्यक्रम है जो शिक्षकों में आवश्यक ज्ञान, दृष्टिकोण, व्यवहार और कौशल विकसित करता है जो कक्षा, स्कूल और समुदाय में अपनी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से और कुशलतापूर्वक निर्वहन के लिए आवश्यक हैं।

शिक्षक की शिक्षा के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण संकेत

1. एनसीईआरटी और शिक्षा के क्षेत्रीय कॉलेजों की स्थापनारू 1961 में नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीईआरटी) की स्थापना की गई थी, जो सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ टेक्स्ट–बुक रिसर्च, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ एजुकेशनल एंड वोकेशनल गाइडेंस को मर्ज करता है। राष्ट्रीय बेसिक शिक्षा संस्थान।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में शिक्षा के क्षेत्रीय कॉलेजों की स्थापना 1963 में NCERT के तत्वावधान में की गई थी। इन क्षेत्रीय कॉलेजों को चार साल की अवधि के कंटेंट–कम शिक्षा पाठ्यक्रम आयोजित करके पेशेवर और सामान्य कार्यक्रमों को एकीकृत करने के लिए बनाया गया था।

2. शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण (CERT) की राज्य परिषदों की स्थापनारू प्रत्येक राज्य में, 1960 के दशक के दौरान एक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना की गई थी। इन परिषदों में से एक प्रमुख कार्य प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नियंत्रित और पर्यवेक्षण करना है।

3. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) की स्थापनारू देश में अध्यापक शिक्षा के मानकों को बनाए रखने के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 1973 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) की स्थापना की। लेकिन छब्ज्म् 1993 तक प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सका, जब इसे राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च निकाय के रूप में वैधानिक दर्जा दिया गया।

4. शैक्षिक प्रशिक्षण के लिए जिला संस्थानों की स्थापना (DIET)रू शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुवर्ती के रूप में शैक्षिक प्रशिक्षण के लिए जिला संस्थान (DIETs) की स्थापना की गई थी।

वे देश के अधिकांश राज्यों में प्रारंभिक शिक्षकों के प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए मुख्य आपूर्ति संस्थान हैं। अब DIETs कई क्षेत्रों में कार्य करता है–शिक्षक प्रशिक्षण (इन–सर्विस और प्री–सर्विस), पाठ्यक्रम और सामग्री विकास, अनुसंधान और विस्तार, योजना और प्रबंधन। विभिन्न परिषदों और सर्वोच्च निकायों की स्थापना के अलावा, 1990 के दशक में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी), 2001 में एसएसए और समागम शिक्षा अभियान (2018), एनसीएफ 200, आरटीई–अधिनियम और एनसीएफटीई 2009 जैसे विभिन्न पाठयक्रम सुधारों की योजनाओं ने उल्लेखनीय प्रभाव डाला।

पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

एनपीई 1986 और इसके प्रोग्राम ऑफ एक्शन (पीओए) ने जिला स्तर पर शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डायट) नामक एक नवीन संस्थान की कल्पना और परिभाषित किया। क्म्ज् को शिक्षा के प्रारंभिक चरण से जुड़े पदाधिकारियों की शैक्षणिक क्षमता में सुधार और अद्यतन करने के लिए डिजाइन किया गया है। कार्यों को पूरा करने के लिए, दिशानिर्देश 1989 ने DIET] प्री–सर्विस, वर्क एक्सपीरियंस, एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, प्लानिंग एंड मैनेजमेंट, डिस्ट्रिक्ट रिसोर्स यूनिट, इन–सर्विस एजुकेशन, फील्ड इंटरेक्शन एंड कोऑर्डिनेशन एंड करिकुलम, मटेरियल डेवलपमेंट और 7 शाखाओं की स्थापना का सुझाव दिया। मूल्यांकन शाखा।

इस शाखा का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों के भावी शिक्षकों के लिए दो वर्षीय पूर्णकालिक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन करना है। इसमें दाखिले, निर्देश और मूल्यांकन से संबंधित मामलों से संबंधित है और पाठ्यक्रम को अकादमिक इनपुट प्रदान करना है। यह DIET में आठ संकायों वाली सबसे बड़ी शाखा है, जिसमें भाषा, विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन आदि यशपाल समिति (1993) जैसे विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों की शिक्षा और नींव की पृष्ठभूमि है, जिसमें पूर्व के गुणात्मक सुधार का सुझाव दिया गया है। & Service शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वह ध वह मानव इंजीनियरिंग के सबसे नाजुक कार्य में लगे हुए हैं, जो भी संसाधन और उपकरण उसके ध उसके पास उपलब्ध हैं। सभी ठीक सामग्री–सर्वोत्तम पुस्तक या इकाइयाँ, मॉडम गैजेट और लैब उपकरण एक गरीब या उदासीन शिक्षक के हाथों में धूल में बदल जाएंगे। केवल वह शिक्षक, जो जानता है, उसकी कला, उद्देश्य की भावना है और उसके पास अपनी खुद की सामग्री साझा करने और अपने छात्रों के लिए एक रचनात्मक अनुभव सीखने के लिए आवश्यक उत्साह है। इसलिए भावी शिक्षकों को उनके संज्ञानात्मक, स्नेहपूर्ण और मनोविशेषज्ञों का आकलन करने के लिए सर्वोपरि देखभाल करना आवश्यक है। प्री–सर्विस प्रोग्राम चार मानकों (मिरियम, 2013) के आसपास उन्मुख था। इन मानकों को पूरा करना उनके शिक्षण पर निर्भर करता है।

शिक्षक की शिक्षा में मूल्यांकन

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

संतोष शर्मा (2014) ने सुझाव दिया, जब शिक्षण विधियाँ बदलती हैं, तो मूल्यांकन प्रक्रियाएँ तदनुसार बदलनी चाहिए। मूल्यांकन शिक्षण शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों के शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करना है। स्कूल के अनुभव कार्यक्रम के दौरान, विद्यार्थियों–शिक्षकों को चिंतनशील डायरी विकसित करनी चाहिए और अपने विचारों को विकसित करने के लिए इन प्रतिबिंबों का उपयोग करना चाहिए। मूल्यांकन के लिए शिष्य शिक्षक चिंतनशील डायरी के रिकॉर्ड पर विचार किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए साक्ष्य आधारित होना आवश्यक है। मूल्यांकन गुणात्मक टिप्पणियों के संदर्भ में हो सकता है। विद्यार्थियों–शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षकों को अपने स्वयं के शिक्षण अधिगम को बेहतर बनाने के लिए मूल्यांकन से प्रतिक्रिया का उपयोग करना चाहिए। मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य शिक्षण अधिगम में सुधार लाना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF2005) शिक्षक पर विभिन्न मांग और अपेक्षाएं रखती है, जिन्हें प्रारंभिक और सतत शिक्षक की शिक्षा दोनों द्वारा संबोधित किया जाना चाहिए। सक्षम शिक्षक के महत्व को अच्छी तरह से पता है कि सीखने की उपलब्धि की गुणवत्ता और सीमा मुख्य रूप से शिक्षक क्षमता, संवेदनशीलता और शिक्षक प्रेरणा द्वारा निर्धारित की जाती है। यह भी सामान्य ज्ञान है कि शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों के शैक्षणिक और व्यावसायिक मानक आवश्यक शिक्षण परिस्थितियों के एक महत्वपूर्ण घटक का गठन करते हैं। शैक्षणिक तैयारी की लंबाई, विषय वस्तु ज्ञान का स्तर और गुणवत्ता, अध्यापक कौशल का प्रदर्शन, शिक्षक के पास विविध शिक्षण स्थितियों, पेशे के प्रति प्रतिबद्धता की डिग्री, समसामयिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता और सीखने के लिए समस्याओं की आवश्यकता होती है। और प्रेरणा का स्तर गंभीर रूप से कक्षाओं में पाठ्यक्रम लेन–देन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और इस तरह विद्यार्थियों को सीखने और सामाजिक परिवर्तन की बड़ी प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। विशेष रूप

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

से प्रारंभिक शिक्षक की शिक्षा में शिक्षक के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका होती है। यह कॉल करने के लिए नौसिखिए प्रवेश की दीक्षा को चिह्नित करता है और जैसे कि आकांक्षाओं, ज्ञान–आधार, शैक्षणिक क्षमताओं के प्रदर्शनों की सूची और मानवीय दृष्टिकोणों के साथ–साथ शिक्षक बनने की जबरदस्त क्षमता है। यह मौजूदा तरीकों में बदलाव लाकर शिक्षक की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो शिक्षक केंद्रित शिक्षार्थी से एक शैक्षणिक बदलाव हैरू अनुशासनात्मक से बहुविषयक ध्यान केंद्रित करने के लिए एक पाठ्यक्रमीय बदलाव, और संक्षिप्त, कुछ शिक्षाप्रद बहुविध, सतत मूल्यांकन से परिवर्तन का आकलन। एनसीएफ –2005 एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में सीखने पर विचार करता है जहां शिक्षार्थी अपने अनुभवों और अपनी स्थितियों के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में पूर्व ज्ञान के आधार पर अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं।

शिक्षक की शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCFTE 2009)

नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर एजुकेशन (NCTE) ने टीचर एजुकेशन का नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क तैयार किया है, जिसे मार्च 2009 में सर्कुलेट किया गया था। यह फ्रेम वर्क NCF, 2005 की पृष्ठभूमि में तैयार किया गया है और बच्चों के अधिकार से मुक्त करने के लिए सिद्धांतों को निर्धारित किया गया है। और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009 जिसे शिक्षक की शिक्षा पर एक परिवर्तित ढांचे की आवश्यकता थी, जो छब्थ्, 2005 में अनुशंसित स्कूल पाठ्यक्रम के परिवर्तित दर्शन के अनुरूप होगा। शिक्षक की शिक्षा की दृष्टि को स्पष्ट करते हुए, फ्रेमवर्क में नए दृष्टिकोण के कुछ महत्वपूर्ण आयाम हैं शिक्षक की शिक्षा, निम्नानुसार:

शिक्षक की शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य होने के लिए चिंतनशील अभ्यासरू

छात्र शिक्षकों को नए विचारों के आत्म–अध्ययन, प्रतिबिंब, आत्मसात और अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए

स्व–निर्देशित सीखने और सोचने की क्षमता, महत्वपूर्ण होने और समूहों में काम करने की क्षमता विकसित करना।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

बच्चों के साथ अवलोकन और संलग्न करने के लिए छात्र–शिक्षकों को अवसर प्रदान करना,

बच्चों के साथ संवाद और संबंध

शिक्षक क्षमता

योग्यता एक शब्द है जिसका इस्तेमाल अलग–अलग लोगों द्वारा अलग–अलग संदर्भों में बड़े पैमाने पर किया जाता हैय इसलिए, इसे विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया जाता है। शिक्षक की शिक्षा और नौकरी का प्रदर्शन दो संदर्भ हैं जिसमें इस शब्द का उपयोग किया जाता है। योग्यताएँ हैं – शिक्षक की शिक्षा और एक शिक्षक–प्रशिक्षु को शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम (हौस्टन, 1987) के सफल समापन के लिए ज्ञान, कौशल और मूल्यों को शामिल करना चाहिए।

योग्यता की कुछ विशेषताएं हैं

एक योग्यता में एक या अधिक कौशल होते हैं जिनकी महारत सक्षमता प्राप्त करने में सक्षम होती है

एक योग्यता तीनों डोमेन से जुड़ी होती है, जिसके तहत प्रदर्शन का आकलन किया जा सकता हैरू ज्ञान, कौशल और दृ ष्टिकोण।

एक प्रदर्शन आयाम को ध्यान में रखते हुए, क्षमताएँ अवलोकनीय और प्रदर्शन योग्य हैं

चूँकि योग्यताएँ अवलोकनीय हैं, इसलिए वे औसत दर्जे की भी हैं। एक शिक्षक से एक योग्यता का आकलन करना संभव है

शिक्षण दक्षताओं में ज्ञान, कौशल और दृ ष्टिकोण की समान मात्रा की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन कुछ नहीं करेंगे। कुछ दक्षताओं में अधिक शामिल हो सकते हैं

कौशल या दृष्टिकोण से ज्ञान, जबकि, कुछ दक्षता अधिक कौशल या प्रदर्शन आधारित हो सकती है।

शिक्षक क्षमता एक व्यापक शब्द है जिसमें शिक्षक के व्यक्तित्व, चित्रण और प्रक्रिया और उत्पाद चर शामिल हैं जबकि शिक्षण क्षमता कक्षा कक्ष शिक्षण के दौरान शिक्षण व्यवहार तक ही सीमित है। इन सभी को ध्यान में

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

रखते हुए, शोधकर्ता ने शिक्षण योग्यता उपकरण तैयार किया और संज्ञानात्मक रचनावादी रणनीतियों का उपयोग करके पूर्व–सेवा शिक्षकों की शिक्षण योग्यता भी विकसित की।

शिक्षण विधि

शिक्षण पद्धति शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण विधियाँ, छात्रों द्वारा पाठ्य सामग्री को हस्तांतरित करने के लिए शिक्षक द्वारा अपनाई जाने वाली विधियाँ हैं। यह केवल शिक्षण विधियों का एक सतही विवरण है जिसे हम पारंपरिक रूप से स्वीकार करते हैं। पाठक व्याख्यान पद्धति, व्याख्यान प्रदर्शन विधि, अनुमानी पद्धति, डाल्टन योजना और जैसी कई शिक्षण विधियों से अवगत हो सकता है। प्रत्येक और हर विधि को अपनाने का उद्देश्य शिक्षकों और शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए बहुत स्पष्ट है। यह स्कूल पाठ्यक्रम के लेन–देन के माध्यम से छात्रों के मामले में व्यवहार के कुछ वांछनीय परिवर्तन के अलावा कुछ भी नहीं है। यह लेन–देन शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच कक्षा में शिक्षक द्वारा निष्पादित योजनाबद्ध गतिविधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से किया जाता है। वे नियोजित गतिविधियाँ पाठ्यक्रम को सम्प्रेषित करने के लिए अध्यापक के रूप में अध्यापक की सेवा करती हैं। शिक्षण की विधि लक्ष्य समूह पर केवल एक प्रकार का प्रत्यक्ष प्रभाव पैदा करती है। एक सीधा प्रभाव पाठयक्रमों के लेन–देन का प्रभाव है। यह अध्यापकों द्वारा अध्यापन को शिक्षण उपलब्धि के रूप में सिखाने का परिणाम है। इस सीखने की उपलब्धि के लिए मनोवैज्ञानिक व्यवहार के परिवर्तन के रूप में अधिक व्यापक स्पष्टीकरण देते हैं। शिक्षण विधियों में, मुख्य पहलू सामग्री को लेन–देन करने का तरीका हैण

डॉ.अब्दुल कलाम विभिन्न स्तरों पर शिक्षण के विभिन्न तरीकों का सुझाव देते हैं। वह सलाह देते हैं कि प्राथमिक स्तर पर गतिविधियों के माध्यम से अन्वेषण, नवीनता और रचनात्मकता पर जोर दिया जाना चाहिए। वह शिक्षण की पारंपरिक पद्धति की वकालत नहीं करता है। वह कर और आत्म–अवलोकन करके सीखने का पक्ष लेता है और कहता है कि कक्षा के बाहर

आत्म–अवलोकन करना विद्यार्थी के लिए सीखने के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। एक बच्चे को अवलोकन, क्षेत्र अध्ययन, प्रयोगों और चर्चाओं के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार बनना चाहिए। उन्होंने कहा, जब शिक्षक बच्चों के साथ बातचीत करते हैं तो वे एक वैज्ञानिक के तरीके से ऐसा करते हैं। यह तकनीक बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा देती है।

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका

रचनाकार कक्षा में, शिक्षक चर्चा की सुविधा देता है। इस प्रकार, शिक्षक छात्रों से ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो उन्हें विषय पर अपना निष्कर्ष विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे। रचनात्मक शिक्षक छात्रों को यह आकलन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि गतिविधि कैसे उन्हें समझने में मदद कर रही है। खुद और उनकी रणनीतियों पर सवाल उठाते हुए, रचनाकार–निर्माण में छात्रों ने सीखने के लिए उपकरण बनाए। एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध कक्षा के वातावरण के साथ, डेविड जोनासेन (1999) ने रचनाकारों के लिए रचनात्मक भूमिकाओं में छात्रों की सहायता के लिए प्रमुख भूमिकाओं की पहचान की, जैसे मॉडलिंग, कोचिंग, छात्रों को शिक्षक और एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक संबंध को प्राधिकरण और नियंत्रण से मार्गदर्शन सहायता और सुविधा के लिए स्थानांतरित करना होगा। शिक्षक समस्या निवारण और पूछताछ आधारित शिक्षण गतिविधियों जैसे उपकरण प्रदान करते हैं, जिसके साथ छात्र अपने विचारों को तैयार करते हैं और उनका परीक्षण करते हैं, निष्कर्ष और निष्कर्ष निकालते हैं और एक सहयोगी शिक्षण वातावरण में अपने ज्ञान से अवगत कराते हैं। ट्रांसमिशन मोड की तुलना में, रचनावादी दृष्टिकोण बाल केंद्रित है। लेकिन यह सुझाव देने के लिए नहीं है कि शिक्षक बच्चे को बढ़ने के दौरान सिर्फ किनारे पर बैठता है, इसके विपरीत, रचनावादी शिक्षण के लिए शिक्षक को बहुत सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता होती है, और एक जो विशेषज्ञता, ज्ञान और व्यावसायिकता का आह्वान करता है। यह एक बीच का रास्ता है, लेकिन या तो डिडक्टिक ट्रांसमिशन मोड या अनरजिस्टर्ड डिस्कवरी से बेहतर तरीका

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

है। शोधकर्ता ने एक रिज के साथ एक तरह से सादृश्य द्वारा इसका प्रतिनिधित्व करने का प्रयास किया है। गिरने, एक तरफ या दूसरे से जुड़े खतरे को ऐसे रास्तों की एक ज्ञात विशेषता है।

रचनावादी दृष्टिकोण सभी स्कूल सीखने के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ ज्ञान, यदि यह तथ्यात्मक प्रकार का है, या पारंपरिक रूप से परिभाषित करने की आवश्यकता है, तो उन्हें सीधे प्रेषित किया जाना चाहिएरू ऐसे मामलों में, रचनात्मकता या व्यक्तिगत कल्पना की आवश्यकता नहीं होती है, और कोई भी परिवर्तन फायदेमंद नहीं होगा। उदाहरणों में सीखने और राष्ट्रगान शामिल हो सकते हैं। हालाँकि, बहुत रट्टा सीखने की शब्दावली है – शब्द जो विशेष विचार को संदर्भित करते हैं। नाम सीखना आसान है एक बार बच्चे को पता है कि वे क्या उल्लेख करते हैं, लेकिन अन्यथा एक निरंतर कोर। उदाहरण के लिए, यह एक युवा बच्चे को उत्तर, उत्तर–पूर्व, पूर्व आदि नामों को सिखाने की कोशिश करने के लिए गुमराह किया जाएगा, जिनके पास दिशा की कोई भावना नहीं है, और अभी भी दाएं और बाएं भी अनिश्चित थे। इसलिए यह निर्धारित करने के लिए रचनात्मक तरीकों का उपयोग करना बुद्धिमान होगा कि क्या बच्चे कुछ चीजों को सीखने के लिए तैयार हैं, भले ही यह केवल तथ्यात्मक लगता हो। रचनाकार शिक्षक शिक्षार्थी के बीच मध्यस्थ का काम करता है और उनके प्रश्नों के महत्व को समझता है। रचनाकार शिक्षक मानता है कि बच्चे निकट अवलोकन, तार्किक तर्क, परिकल्पना तैयार करने और उनका परीक्षण करने में सक्षम हैं और उनकी खोज की अपनी प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए। रचनाकार शिक्षक का मानना है कि उसकी जिम्मेदारी बच्चों को अच्छे प्रश्नों की रूपरेखा तैयार करने और स्वयं के खुले प्रश्नों को हल करने में मदद करना है। वह उनका ध्यान और उनकी चर्चा का मार्गदर्शन करती है, और उस प्रक्रिया को बारीकी से देखती है जिसके द्वारा वे निष्कर्ष पर आते हैं। वह अपने निष्कर्षों की सटीकता के बारे में चिंतित नहीं है क्योंकि वह दुनिया के बारे में उनकी जिज्ञासा की चौड़ाई और गहराई के बारे में है और इसे समझने की कोशिश में उनकी संसाधनशीलता है।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

प्रभावी शिक्षक

शिक्षण एक जटिल कला है। प्रभावी शिक्षक उन तकनीकों का उपयोग करते हैं जो अपने छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा करते हैं। कई चीजें हैं जो छात्र खुद को खोज के माध्यम से सीख सकते हैं, शिक्षक ने शिक्षण को सूट करने के लिए संरचित किया है। कई चीजें ऐसी भी हैं जिनके लिए शिक्षक को अधिक प्रत्यक्ष तरीके से पढ़ाने की आवश्यकता होती है। छात्रों को न केवल सीखने के अवसरों से अवगत कराया जाता है, बल्कि उन्हें उन चीजों को भी स्पष्ट रूप से सिखाया जाना चाहिए, जिन्हें जानना सभी छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है। कुछ छात्र इन चीजों को जल्दी और केवल न्यूनतम प्रत्यक्ष शिक्षण के साथ सीखेंगे। अन्य छात्रों को आवश्यक शिक्षण में महारत हासिल करने से पहले शिक्षक द्वारा प्रत्यक्ष शिक्षण और सुधार की आवश्यकता होगी। हिवियो, एक फिनिश शिक्षक, ने अच्छे शिक्षक की तीन प्रमुख विशेषताओं की पहचान की

कुशल शिक्षक छात्रों को स्वयं के साथ और दूसरों से सीखने में मदद करते हैं। वे जानते हैं कि छात्र सबसे अच्छा सीखते हैं यदि उन्हें न केवल शिक्षक से, बल्कि साथियों और स्कूल के बाहर के स्रोतों से भी सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है जो अब विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी के माध्यम से आसानी से उपलब्ध हैं। प्रभावी शिक्षक शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से एक सुरक्षित और व्यवस्थित वातावरण प्रदान करते हैं, ताकि छात्र अपनी क्षमता को प्राप्त कर सकें। वे जानते हैं कि छात्र सबसे अच्छी तरह से सीखते हैं यदि वे एक कक्षा में हैं जहां वे नए कार्यों का प्रयास करने के लिए सुरक्षित और आत्मविश्वास महसूस करते हैं, भले ही पहले तो वे उनसे निपटने के तरीके के बारे में अनिश्चित हों। प्रभावी शिक्षक सीखने की प्रक्रियाओं के अपने ज्ञान का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए करते हैं कि कौन से विद्यार्थी अपनी कक्षाओं में सफलतापूर्वक सीखने में मदद करने के लिए सबसे प्रभावी होंगे। प्रभावी शिक्षक अपने छात्रों के साथ उत्पादक संबंध विकसित करते हैं, जिससे वे उन्हें जानते हैं और उनके समग्र विकास और प्रगति में विशेष रुचि लेते हैं। वे अपने छात्रों के साथ सम्मान का व्यवहार करते हैं और

बदले में भी यही उम्मीद करते हैं। प्रभावी शिक्षक छात्र सीखने में लाभ के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करते हैं। प्रभावी शिक्षक उन मानकों को समझते हैं

निष्कर्ष

शिक्षकों की निरंतर सेवा शिक्षा उनके व्यावसायिक वातावरण में हो रहे परिवर्तनों के बीच उन्हें बनाए रखने और उनकी बदलती भूमिका के मद्देनजर उनके कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए आवश्यक है। प्रशिक्षण में नवीनतम दृष्टिकोण और पद्धति का पालन किया जाना चाहिए। इस डाइट में हितधारकों और शिक्षार्थियों के साथ समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान के लिए बातचीत करना और सार्थक अनुभवों, नवाचारों और सफलता की कहानियों आदि के बारे में जानकारी एकत्र करना है। जिले में स्कूलों की विशिष्ट समस्याओं से निपटने के लिए कार्रवाई अनुसंधान और प्रयोग किए जाने हैं। । इन क्षेत्र के अनुभवों को विभिन्न सेवा शिक्षा कार्यक्रमों में इस्तेमाल किया जा सकता है। स्कूल के अनुभव कार्यक्रम के दौरान, विद्यार्थियों–शिक्षकों को चिंतनशील डायरी विकसित करनी चाहिए और अपने विचारों को विकसित करने के लिए इन प्रतिबिंबों का उपयोग करना चाहिए। मूल्यांकन के लिए शिष्य शिक्षक चिंतनशील डायरी के रिकॉर्ड पर विचार किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए साक्ष्य आधारित होना आवश्यक है। मूल्यांकन गुणात्मक टिप्पणियों के संदर्भ में हो सकता है। विद्यार्थियों–शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षक शिक्षकों को अपने स्वयं के शिक्षण अधिगम को बेहतर बनाने के लिए मूल्यांकन से प्रतिक्रिया का उपयोग करना चाहिए। मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य शिक्षण अधिगम में सुधार लाना है। स्वतंत्रता के बाद की शैक्षिक नीति का उद्देश्य सभी बच्चों को प्रारंभिक स्तर तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति में संवैधानिक निर्देश (1986) और इसके कार्यक्रम, 1992 के कार्यक्रम। प्राथमिक विद्यालय सीखने की ध्वनि नींव रखने में एक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी व्यक्ति की सफलता या असफलता ज्यादातर इसी स्तर पर निर्धारित होती है।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गोल्डस्मिथ, एम। (2010)। सॉफ्ट स्किल बढ़ाने वाली कर्मचारीरू नई दिल्लीरू आई। के। इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.

हरिहरन, एस। एट। (२०१०)। सॉफ्ट स्किल्स। चेन्नईरू एमजेपी पब्लिशर्स।

हेलैया, एस। (2011)। छात्र शिक्षकों के लिए एक जीवन कौशल कार्यक्रम का विकास और कार्यान्वयन। एम। एस। यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वडोदरारू ब्रम्।

हेंड्रिक्स, पी। (1996)। जीवन कौशल मॉडल को लक्षित करनारू जीवन कौशल विकास एम्स, आईए के प्रभाव का आकलन करने के लिए विकास के उपयुक्त सीखने के अवसरों को शामिल करनारू आयोवा स्टेट यूनिवर्सिटी। जीवन कौशल का इतिहास शिक्षा आधारित।

जैन, आर। (1983)। भाषा, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान शिक्षकों के गैर मौखिक कक्षा इंटरैक्शन पैटर्न। एम.बी.बुच (एड।) में, शिक्षा में अनुसंधान का फोर्थ सर्वेक्षण, वॉल्यूम प्प 1029– 1030 नई दिल्लीरू छब्म्त्ज।

जेम्स, एल। (2006)। द फर्स्ट बुक ऑफ लाइफ स्किल्स मुंबईरू एम्बेसी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स। जौहरी, पी। (2008)। फाउंडेशन ऑफ एजुकेशनरू नई दिल्लीरू अनमोल प्रकाशन प्रा.लि.

कालियारमस्म, एम। एट। अल (2016)। षकिशोरों में आत्म–जागरूकता का महत्वष एक विषयगत शोध पत्र। मानविकी और सामाजिक विज्ञान के प्वैद्ध जर्नल। वॉल्यूम –21, 19–22।

कार्तिकेयन, एस। (2009)। जीवन कौशल शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन। त्ळछप्ल्व में (2009) लाइफ स्किल एजुकेशनरू बुक ऑफ एब्सट्रैक्ट्स, डिपार्टमेंट ऑफ लाइफ स्किल एजुकेशन, त्ळछप्ल्क्रू श्रीपेरंबुदूररू 106

कोठारी, सी। आर। (2004)। रिसर्च मेथोडोलॉजीरू मेथड्स एंड टेक्नीक्स (2 डी एड।) नई दिल्ली। भारतरू न्यू एज इंटरनेशनल (पी) लिमिटेड के प्रकाशक। 77

कोठारी, डी.एस. (1964–66)। शिक्षा आयोग की रिपोर्ट। नई दिल्लीरू शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

मंगल, एस। (2011)। उन्नत शिक्षा मनोविज्ञान। नई दिल्लीरू प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।

मंगरुलकर, एल। अल। (2001)। जीवन कौशल बाल और किशोर स्वस्थ मानव विकास, किशोर स्वास्थ्य और विकास इकाई, स्वास्थ्य संवर्धन और संरक्षण विभाग, पैन अमेरिकी स्वास्थ्य संगठन,

वाशिकरण, डीसी। मंजूनाथ, एस। (2014)। बैंगलोर और मैसूर शहरों में कॉलेज के छात्रों के पारस्परिक संबंधों पर सोशल नेटवर्किंग साइटों के प्रभाव पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। मैसूर विश्वविद्यालयरू ीजजचेरूध्ध्ेवकीहंदहं.पदसिपइदमज.ंब. पदध्हंदकसमध्10603ध्72639 20ध्4ध्18 को पुनः प्राप्त

मोटपे, एम.एम. (2006)। प्रारंभिक किशोर एड्स अनाथों के लिए एक जीवन कौशल कार्यक्रम। अंतर्राष्ट्रीय सार, फरवरी, खंड में निबंध। 67, 3165–ए।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, (2009)। पेशेवर और मानवीय शिक्षक तैयार करने की दिशा में शिक्षक की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। नई दिल्ली, भारत।